बी0टी0सी0 (द्विवर्षीय) पाठ्यक्रम
(सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए) **सेमेस्टर – प्रथम**

संस्कृत

पाठ–1

विषय–आस–पास की वस्तुओं पशु–पक्षियों के संस्कृत नाम की जानकारी

उद्‌देश्य–

- संस्कृत भाषा सीखने की प्रक्रिया से अवगत कराना एवं प्रक्रिया के विभिन्न स्तरों को स्पष्ट करना।
- आस–पास की वस्तुओं एवं पशु–पक्षियों के संस्कृत नाम सिखना।
- संस्कृत भाषा से जोड़कर उसके संस्कृत शब्द का प्रयोग कराना।
- भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में उपयुक्त संस्कृत के शब्दों का ज्ञान कराना।

सामान्यतया बच्चे आस–पास की वस्तुओं और पशु–पक्षियों से परिचित होते हैं बच्चे इन वस्तुओं और पशु–पक्षियों के आंचलिक/हिन्दी नाम की जानकारी रखते हैं। चूँकि व्यवहार में संस्कृत न होने से बच्चे संस्कृत नाम से अपरिचित होते हैं। अतः प्रशिक्षु बच्चों को परिवेशीय वस्तुओं जैसे–पेड़–पौधे, खेल–खलिहान बाग–बगीचे आदि तथा पक्षियों के नाम जैसे–कौआ गाय, सिंह, बानर, आदि के नाम को संस्कृत में चित्र द्वारा बातचीत करके उनके संस्कृत शब्द को बताकर उसका बोध करा सकते हैं जिससे बच्चे उन नामों से जुड़कर उसका प्रयोग संस्कृत में कर सकते हैं।

शिक्षण विधियाँ /तरीके–

1. वार्तालाप विधि।
2. चित्र विधि।
3. प्रश्नोत्तर विधि।
4. छोटे–छोटे वाक्यों के द्वारा।
5. प्रोजेक्ट विधि।

1. वार्तालाप विधि– प्रश्न यह है कि संस्कृत सीखने–सिखाने के लिए कौन सी विधि अपनायी जाय जिससे छात्र सहजता एवं सरलतापूर्वक ग्रहण कर सके तथा संस्कृत भाषा में वार्तालाप करने के लिए प्रेरित हो सके इसके लिए वार्तालाप विधि श्रेष्ठ मानी जाती है। वार्तालाप या बातचीत अपने आप में एक ऐसी विधि है जो किसी भी भाषा को सीखने एवं उसे मजबूती प्रदान करने में सरलता से मदद करती है।

संस्कृत सीखने–सीखाने के लिए भी प्रशिक्षु सर्वप्रथम इसी विधि का चयन करें। भाषा सीखने के चरण पढ़ना लिखना, बोलना, सुनना के आधार पर पहले प्रशिक्षु आस–पास की वस्तुओं एवं पशु–पक्षियों के संस्कृत नाम बताये।

- कक्षा में सुगमकर्त्ता आस–पास की वस्तुओं, पशु–पक्षियों दैनिक व्यवहार, शिष्टाचार से सम्बंधित संस्कृत शब्दों में बातचीत करें। इसके बाद सुगमकर्त्ता बच्चों को दो समूहों में बाँटकर उसकी आस–पास की वस्तुओं एवं पशु–पक्षियों के नाम स्थानीय बोली के माध्यम से एक समूह से

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

बुलवाये तथा दूसरे समूह से उन वस्तुओं एवं पशु—पक्षियों के संस्कृत नाम बोलने को कहे इस तरह बच्चे उनके संस्कृत नाम से जुड़ जायेंगे।

- कुछ ऐसे शब्द अपने तद्भव और तत्सम रूप में दैनिक रूप में प्रयोग एक एक जैसे होते हो उनको बताये। जैसे—

कउवा	कौआ	काकः
कुकुर	कुक्कुर	कुक्करः

- बातचीत में एक कक्षा के बच्चों को चार समूह में बांटकर प्रत्येक समूह को वर्गीकृत वस्तुओं को प्रशिक्षु बोलने के लिए प्रेरित करें जैसे—किसी एक समूह के बच्चों को घर में पायी जाने वाली वस्तुओं के नाम। दूसरे समूह के बच्चों को खेल सामग्रियों के नाम तीसरे समूह के बच्चों को वस्तुओं के नाम, चौथे समूह में पुष्पों के नाम को बोलने के लिए प्रेरित करें। प्रशिक्षु समूह में आये हुए शब्दों, वस्तुओं के नाम संस्कृत रूप में बोलने को कहे इसी प्रकार के समूह का विभाजन करते हुए बच्चों से बुलवाये।
- बातचीत को आगे बढ़ाते हुए प्रशिक्षु आस—पास की वस्तुओं और पशु—पक्षियों के संस्कृत नाम जो हिन्दी नाम में समानता रखने वाले हों उन शब्दों को सुनाने व बुलवाने का वातावरण तैयार कर सकता है।

समानता वाले शब्दः—

हिन्दी नाम	**संस्कृत नाम**	**हिन्दी नाम**	**संस्कृत नाम**
पुस्तक	पुस्तकम्	छात्र	छात्रः
कलम	कलम्	बालक	बालकः
विद्यालय	विद्यालयः	वानरः	वानरः

चित्र विधिः—

चित्र विधि से बच्चे चित्र को देखने के बाद सहज रूप से विषय से जुड जाते हैं एवं प्रशिक्षु आसानी से अपनी बात को समझा लेता है। चित्रविधि से आस—पास की वस्तुओं एवं पशु—पक्षियों के संस्कृत नाम से परिचित कराने के लिए चित्र में दिख रहे जानवरों, पशु—पक्षियों, घरेलू एवं आस—पास के सामनों का नाम बच्चों से प्रशिक्षु पूछे एवं उन हिन्दी नाम को क्रम से संस्कृत नाम के रूप में बातचीत के माध्यम से परिचित कराये।

- मनुष्य का चित्र बनाकर उसके अंगों के संस्कृत नाम की जानकारी बच्चों को दी जा सकती है जैसे— केशः ललाटः, नेत्रम्, दन्तः ओष्ठः, नखः हस्तः नाभिः उरूः जानुः, चरण आदि।

प्रश्नोत्तर विधिः—

बच्चे स्वाभाविक रूप से चित्र को देखकर प्रश्न करते हैं एवं प्रशिक्षु प्रश्न करने का उन्हें पर्याप्त मौका देते हुए बच्चों के दो समूहों का गठन करें। एक समूह दूसरे समूह को आस—पास की वस्तुएँ एवं पशु—पक्षियों को दिखाते हुए उसका संस्कृत नाम पूछेगा ? हो सकता है कि दूसरा समूह कुछ वस्तुओं एवं पशु—पक्षियों के संस्कृत नाम नहीं बता सके तो प्रशिक्षु स्वयं संस्कृत नाम बताये एवं यह क्रम समूह में बदल—बदल करके बार—बार कराने से बच्चे संस्कृत नाम से जुड़ जायेंगे।

Downloaded From **www.dietmathura.org**

उदाहरण–

- वस्तुएं दिखाकर– ☐ अंय कः ?
- किताब दिखाकर ☐ – इदं किम् ?
- गेंद दिखाकर ☐ – इदं किम् ?

प्रोजेक्ट विधिः–

प्रशिक्षु आस–पास की वस्तुओं का वर्गीकरण कर शीर्षक एवं उपशीर्षक का निर्माण करें और बच्चों से करायें जैसे–

शीर्षक – अस्माकं परिवेशः

उपशीर्षक – अस्माकं जीव जन्तव – गौः वृषभः काकः मीनः

अस्माकं वृक्षाः – आम्रः जम्बुः कदली

अस्माकं यातायात साधनानि– रेलयानम्

➢ प्रशिक्षु शीर्षक के अनुसार वस्तुओं एवं आस–पास के पशु–पक्षियों के नामों कीसूची बच्चों से तैयार कराये। जैसे–पुस्तक, हाथी कोयल, गाय,

<u>छोटे–छोटे वाक्यों के द्वाराः–</u>

अलग–अलग सूची बनाकर प्रशिक्षु वाक्यों निर्माण करा सकता है–

1. वस्तुओं की सूची
2. पशु पक्षियों की सूची

➢ सूची में आये हुए शब्दों से उचित क्रिया के माध्यम से छोटा–छोटा वाक्य का निर्माण कराये। संस्कृत नाम में इकारान्त अकारान्त शब्दों की पृथक–पृथक सूची बच्चों से तैयार कराये एवं श्यामपट्ट पर लिखने के लिए बच्चों को प्रेरित करें।

➢ **मूल्यांकन–**

1. रिक्त स्थान की पूर्ति करिये।

➢ ––––––––– पठामि ।
पशु––––––––पश्यामि।

2. चित्र से सुमेलित करिये–

रामः	☐	सिंह का चित्र
पुस्तकम्	☐	बालिका का चित्र
दुग्धम्	☐	पुस्तक का चित्र
सीता	☐	दुग्ध का चित्र
	☐	

Downloaded From www.dietmathura.org

सिंह बालक का चित्र

3. चित्रों के माध्यम से हिन्दी नाम बतायें–

मयूरः ☐

हंसः ☐

मृगः ☐

मार्जारी ☐

गजः ☐

4. बच्चों द्वारा अपने आस–पास से संग्रहीत किये गये चित्रों के माध्यम से

5. बच्चे अपने घर, पास–पड़ोस से फल फूल सब्जी जो भी चित्र उपलब्ध हो, उनको संग्रहीत करें। अध्यापक बच्चों की सहायता से चित्रों को एक चार्ट पेपर पर चिपका दें।

ग्राम : ☐ अजा ☐ सिंह ☐

ओदनम् ☐ द्विदलम् ☐

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

पाठ–2
विषय–संज्ञा लिंग एवं वचन की जानकारी

संज्ञा–

बच्चे आस–पास को वस्तुओं, व्यक्तियों, पशु–पक्षियों के नाम की जानकारी होने से संज्ञा से पूर्ण रूप से जुड़े होते हैं किन्तु व्याकरणिक पक्ष से पूरी तरह अनभिग्य होते हैं अतः उन व्याकरणिक पक्षों को आधार बनाते हुए प्रशिक्षु संज्ञा समझ को विकसित करा सकता है। उसे कक्षा कक्ष में उपस्थित सभी चीजों को बताकर बच्चों से बोलने को कह सकता है। जिससे बच्चे उन्हें शब्द रूप देने में सफल हो सकते हैं। बहुत सी वस्तुएँ, नाम, उस जगह का नाम पशु–पक्षियों के नाम का चित्र आदि बताकर संज्ञा को आत्मसात् करा सकते हैं।

उद्‌देश्य–

- संज्ञा की समझ विकसित करना।
- विभिन्न परिस्थितियों में संज्ञा के शब्दों को स्पष्ट करना
- संज्ञा के माध्यम से बच्चों में संस्कृत ज्ञान को बढ़ावा देना।
- संस्कृत में वाक्य कौशल का विकास करना।
- संज्ञा के विविध स्वरूपों से परिचित कराना।

शिक्षण विधियाँ/तरीके–

- बातचीत के द्वारा (वार्तालाप विधि)
- चित्रों के द्वारा
- प्रश्नोत्तर विधि
- दिनचर्या में आने वाले शब्दों के द्वारा
- छोटे–छोटे वाक्यों के द्वारा।

वार्तालाप विधि–

प्रशिक्षु संज्ञा समझ विकसित करने के लिए बच्चों से वार्तालाप विधि अपनाये एंव आस–पास की वस्तुओं, जीव–जन्तुओं के संस्कृत नाम पर विस्तृत चर्चा करें। जैसे–गृहम, गौः, काकः, कुक्कुरः आदि। चर्चा के दौरान बच्चों को कक्षा–कक्ष में उपलब्ध सामानों के बारे में चर्चा करते हुए वाह्य सामानों पर भी विस्तृत रूप से बातचीत करें। जिससे बच्चे उसमें रूचि लते हुए अधिकाधिक शब्दों को खुद बताने लगे। संज्ञा के व्याकरणिक पक्ष को मजबूत करने के लिए वस्तुओं का वर्गीकरण करते हुए संज्ञा भेद को स्पष्ट किया जा सकता है। बच्चों से उनकी रूचि के अनुसार खेलों पर भी चर्चा करें ।

जैसे– क्रिकेट के बारे में।

स्थान	–	वाराणसी
वस्तु	–	ट्राफी
नाम	–	रामः

कक्षा में बच्चों के नाम सामग्री व अन्य बातें

मोहनः	जया
रहीमः	शहनाज

Downloaded From www.dietmathura.org

फलम् पुष्पम् पुस्तकम्—श्यामपट्टः सुखाखण्डः, शिक्षकः आम्रः गुलाबः संस्कृत गंगाः, हिमालयः कुतुबमीनार, शुकः आदि। शुकः मृगः चटकाः इन शब्दों को संज्ञा भेद को ध्यान में रखते हुए निम्न प्रकार से विभाजन किया जा सकता है।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	**जातिवाचक संज्ञा**
मोहन, जाया, रहीम, शहनाज	पुष्पम्, पुस्तकम्, कलमम्, श्यामपट्टः सुधाखण्डः, गंगाः हिमालयः, कुतुबमीनार शुकः मृगः फलम् चटकाः कन्दुकम्।

- संस्कृत वस्तुओं को आधार बनाते हुए व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञा भेद पर बच्चों की समझ को प्रशिक्षु विकसित करा सकता है।
- कक्षा—कक्ष में बच्चों को दो समूहों में वॉटकर। प्रथम समूह से व्यक्तिवाचक संज्ञा से जुड़े शब्दों को प्रशिक्षु बुलवाये एवं दूसरे समूह से जाति वाचक संज्ञा शब्दों को बुलवाये जिससे बच्चों में संज्ञा को समझने में पूर्ण रूप से समझ विकसित होगा।

चित्र विधि द्वारा —

चित्र विधि से संज्ञा समझ एवं संज्ञा भेद को प्रभावी रूप से प्रशिक्षु बच्चों मं विकसित कर सकता है। बच्चे चित्र को देखकर स्वाभाविक रूप से कुछ न कुछ सोचने लगते हैं। प्रशिक्षु उनके मन में चल रहे वस्तु से सम्बधित चित्र (विषय) पर अभिव्यक्ति करने के लिए वातावरण तैयार कर सकता है। उदाहरण स्वरूप—

नाम चित्रः—

काकः	हिमालयः	नकुलः
सिंहः	आलुः	मच्छिकाः
गजाः	पुष्पम्	अजाः

प्रशिक्षु प्रस्तुत चित्र के माध्यम से बच्चों से संज्ञा शब्द पूछ सकता है एवं संज्ञा शब्द के द्वारा किसका चित्र हैं।

इस प्रकार बच्चों से चित्र के द्वारा बातचीत कर संज्ञा समझ को विकसित करने मं मदद मिल सकती है। साथ ही शब्दों का व्यक्ति विशेष एवं जाति विशेष के रूप में वर्गीकरण कर संज्ञा समझ को स्पष्ट किया जा सकता है।

प्रश्नोत्तर विधि— किसी भी प्रकार के ज्ञान को विकसित करने के लिए प्रश्नोत्तर विधि बच्चों को रूचिकर एवं मजेदार हो सकते हैं। बच्चे स्वाभाविक रूप से प्रश्न करते हैं। अतः प्रश्नोत्तर विधि के द्वारा संज्ञा समझ को प्रशिक्षु आसानी से मजबूत कर सकता है। जैसे—परिचयात्मक प्रश्न

प्रशिक्षु— तव किं नाम?
तव मातुः नाम किं?
तव पितुः नाम किं?
त्वं कुत्र निवससि ?
तव विद्यालयस्य नाम किं ?

यह भी हो सकता है कि छात्र उत्तर न दे तो प्रशिक्षु स्वयं मम नाम राजेशः कहकर उससे प्रश्नोत्तर विधि से जोड़े। इस प्रकार प्रश्नोत्तर विधि के बाद उत्तर में आये हुए राजेशः सीता वाराणसी प्राथमिक विद्यालय चिरईगाँव इत्यादि शब्दों से संज्ञा समझ विकसित किया जा सकता है। इस प्रकार परिचयात्मक प्रश्न करकर प्रशिक्षु उसके दायरे को बढ़ते हुए संज्ञा के विस्तृत स्वरूप पर कार्य कर सकता है।

प्रश्नोत्तर विधि से प्रशिक्षु बच्चों का समूह बनाकर पूछें। बालसभा, प्रतियोगिता के माध्यम से भी संज्ञा समझ को विकसित किया जा सकता है।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

दिनचर्या में आने वाले शब्द–

बच्चे प्रतिदिन जिन कार्यों को दिनचर्या में है। उन कार्यों के बारे में चर्चा करते हुए प्रशिक्षु संज्ञा शब्दों के ज्ञान को प्रभावी रूप से विकसित कर सकते हैं। इसमें प्रशिक्षु बच्चों से कार्यों के बारे में पूछेगा एवं उनके द्वारा बोले गये शब्दों को श्यामपट्टः पर लिखेगा। जैसे–

1. दन्तधावनम्
2. दुग्धम्
3. स्नानम्
4. वस्त्रम्
5. भोजनम्
6. विद्यालय्

छोटे–छोटे वाक्य के द्वारा–

छोटे–छोटे वाक्यों के माध्यम से भी संज्ञा समझा को विकसित किया जा सकता है। छोटे–छोटे वाक्य निर्माण उन बच्चों के क्रियाकलापों से जुड़े हों। सरल संस्कृत शब्दों का प्रयोग प्रशिक्षु स्वयं करें।

जैसे–

दन्तधावनम् करोमि।
दुग्धम् पिबामि।
वस्त्रम् धारयामि।
पुस्तकम् पठामिं।
साकं खादामि।
चल चित्रम् पश्यामि।
कलमम् आनय।

पुस्तकम् आनय –जैसे वाक्यों में आये संज्ञा शब्दों को रेखांकित कराकर भी बच्चों में संज्ञा समझ को विकसित किया जा सकता है।

प्रोजेक्ट विधि–

प्रशिक्षु आस–पास की वस्तुओं व संज्ञा का वर्गीकरण कर शीर्षक एवं उपशीर्षक का निर्माण करें और बच्चों से उस पर कार्य करायें।

जैसे– चार्ट बनवाकर –

1. जाति वाचक संज्ञा
2. व्यक्तिवाचक संज्ञा

शीर्षक–स्थान वाराणसी
उपशीर्षक–विभिन्न छोटे–छोटे स्थान (सुजावनपुर गाँव)

- प्रशिक्षु शीर्षक के अनुसार संज्ञा नामों की बच्चा से सूची बनवाये। सूची में आये हुए नामों से छोटे–छोटे वाक्य का निर्माण कराये। उसे पृथक–पृथक श्यामपट्ट पर लिखने को कहे। इस प्रकार बच्चे प्रेरित होकर और उसके प्रति रूचि लेंगे।

मूल्यांकन कार्य–

प्रशिक्षु समय–समय पर आस–पास की वस्तुओं और संज्ञा के नाम की दी जानकारियों पर मूल्यांकन करें।

विधि –

(1) छांटकर खोजिए एवं लिखिए –

Downloaded From www.dietmathura.org

वस्तुओं व पशु–पक्षियों के नाम वर्गों में बांटकर खोजना एवं लिखना।
जैसे–पुस्तकम्–सिंहः

(2) सुमेलित करिये–

हिन्दीनाम	संस्कृत नाम
कौआ	काकः
बैल	वृषभः
कुन्ता	वानरः
कलम	कलमम्
वानर	कुक्कुरः

3. रिक्त स्थान की पूर्ति करिये– चित्र दिखाकर

अयं कः? ☐

इदं कः? ☐

इद कः? ☐

4. दो समूह बनाकर चार्ट बनाइए।

जातिवाचक संज्ञा	व्यक्तिवाचक संज्ञा

लिंग की जानकारी :–

बच्चे माता–पिता, चाची, चाचा, दादा–दादी, भैया दीदी इत्यादि परिवेश में व्यवहृत होने वाले शब्दों से लिंग का आंचलिक ज्ञान से परिचित होते हैं। साथ ही साथ परिवेश से ही माता कहती हैं पिता कहते है जैसे वाक्यों का प्रयोग करने से स्पष्ट है कि बच्चे लिंग के व्यावहारिक पक्ष को जानते हैं। किन्तु लिंग के व्याकरणिक स्वरूप एवं संस्कृत से जुड़े लिंग की समझ को विकसित करने के लिए स्त्रीलिंग पुलिंग, नपुंसकलिंग, शब्दों का वर्गीकरण एवं किया से उनके प्रयोग कराने से लिंग स्पष्ट हो जाता है।

उद्देश्यः–

- लिंग की समझ विकसित करना।
- भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में लिंग भेदों के ज्ञान का विकास करना।
- संस्कृत में लिंग के वाक्य कौशलों का विकास करना।

शिक्षण विधियाँ/तरीके –

- बातचीत द्वारा (वार्तालाप विधि)
- चित्रों के द्वारा
- प्रश्नोत्तर विधि द्वारा
- छोटे–छोटे वाक्यों के द्वारा
- प्रोजेक्ट विधि

वार्तालाप विधि –

बातचीत के द्वारा लिंग का ज्ञान बताकर कर सकते हैं। जैसे– माता, पिता, पुष्पम्।

Downloaded From www.dietmathura.org

वर्गीकरण कराकर बच्चों से बातचीत किया जा सकता है–

स्त्रीलिंग	पुलिंग	नपुंसक लिंग
सीता	रमेशः	पुष्पम्
राधा	मोहनः	कमलम्
ममता	सोहनः	पत्रम्

चित्रों के द्वाराः–

चित्र विधि से लिंग भेद को स्थायी रूप से प्रशिक्षु बच्चों में विकसित कर सकता है। बच्चे चित्र में बने लिंगों को देखकर तुरन्त उसका उत्तर देने लगेंगे और इस प्रकार वातावरण सृजन से लिंग की स्पष्टताः स्वतः हो जायेगी ।

जैसे–

स्त्री का चित्र ☐ पुरूष का चित्र ☐
लड़की (बालिका) का चित्र ☐ बालक का चित्र ☐
पुष्प का चित्र ☐

प्रश्नोत्तर विधिः–

इस विधि का प्रयोग कर प्रशिक्षु बच्चों में स्वाभाविक रूप से लिंग के स्पष्ट कर सकता है।

जैसे– चित्र दिखाकर

सः पठति	बालक का चित्र पढते हुए (पुलिंग)	☐
सा क्रीडति	बालिका का चित्र खेलते हुए (स्त्रीलिंग)	☐
पत्रम्–पतति	वृक्ष से पत्ते गिरते हुए नपुंसकलिंग	☐

छोटे–छोटे वाक्यों के द्वाराः–

छोटे–छोटे वाक्यों के द्वारा लिंग की समझ को प्रशिक्षु बच्चों मं विकसित कर सकता है

जैसे–

जैसे– .... विकसति। (पुष्पम्, कलमम्)

त्वम् ———————— असि । (छात्राः, छात्रः)

त्वम ———————— असि। (बालकः, बालिकाः)

कक्षा में तीन समूह बनवाकर प्रत्येक समूह से तीनों लिंगों के एक–एक शब्द पूछकर उससे सम्बन्धित वाक्य बनवाये जैसे– राम, सीता, पुष्पम्।

क्रिया के साथ प्रयोग कराकर लिंग को स्पष्ट किया जा सकता है।

स्त्री लिंग	पुलिंग	स्त्रीलिंग (प्रयोग कराकर)	पुलिंग (प्रयोग कराकर)
सा	सः	सा गतवति	सः गतवान्
भगिनी	भ्रातः	भगिनी याचितवती	भ्रातः याचितवान्
माता	पिता	माता उपदिष्टवती	पिता उपदिष्टवान्

सर्वनाम् में आये अहं त्वम् ये दोनों शब्द स्त्रीलिंग और पुलिंग दोनों में समान रूप से व्यवह्यत होते है।

प्रोजेक्ट विधिः–

प्रशिक्षु लिंगों का वर्गीकरण कर चित्र ।निर्माण करा सकता है। प्रशिक्षु स्वयं चित्र बनाये और बच्चों से बनवाये। बच्चों के तीन समूह बनवाकर एक समूह पुलिंग के (कक्षा में जितने बालक है) के दूसरा समूह। स्त्रीलिंग (कक्षा में जितनी बालिका है) के तीसरा समूह नपुंसक लिंग के (कक्षा में टंगी हुई सामग्री)।

जैसे राम आदि सीता आदि पुष्पम् आदि।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

मूल्यांकन – प्रशिक्षु समय–समय पर बीच में मूल्यांकन कर उसको स्पष्ट करा सकता है। जिससे बच्चे उसे रूचिपूर्ण ढंग से करने के लिए प्रेरित हो जावेंगे।

1. **उचित विकल्प छांटिएः–**

पुष्पम्	–	(पतन्ति, विकसति)
मित्रम्	–	(गच्छन्ति, पतन्ति)
चक्रे	–	(भ्रमतः, गच्छति)

2. **रिक्त स्थान की पूर्ति–**

पुलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
बालकः	————	————
————	रमा	————
————	————	फलम्

3. **सुमेलित कराकर–**

कमल	वृक्षम–
पेड़	कमलम्
चश्मा	उपनेत्रम्
कमला	रमेशः
रमेश	कमला

4. स्त्रीलिंग और पुलिंग शब्दों का वर्गीकरण कर उसका क्रिया के साथ प्रयोग कराना।

स्त्रीलिंग	**पुलिंग**	**स्त्रीलिंग**	**पुलिंग**
सा	सः	सा————	सः————
स्त्री	पुरूष	स्त्री————	पुरूषः————
छात्रा	छात्रः	छात्रा————	छात्रः————

वचन की जानकारी –

परिवेश से ही बच्चों को एक दो तीन, चार इन संख्याओं का ज्ञान प्राप्त होता है। इन संख्याओं का बोध कराने वाले व्याकरण के शब्दों से बच्चों को जोड़कर उनको वचन की समझ को विकसित किया जा सकता है। बच्चे अपने दैनिक जीवन में वचन का प्रयोग करते हैं। प्रशिक्षु किसी एक वस्तु को दिखाकर एक वचन दो वस्तुओं को दिखाकर द्विवचन तथा बहुत सी वस्तुओं को दिखाकर बहुवचन का बोध करा सकता है। किसी संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध वचन द्वारा होता है।

उद्देश्य–

- वचन की समझ विकसित करना
- भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में वचन की दक्षता विकसित करना।
- संस्कृत में वचन का वाक्य बोध कराना।

शिक्षण विधियाँ /तरीके–

- बातचीत द्वारा
- चित्र विधि द्वारा
- प्रश्नोत्तर विधि
- छोटे–छोटे वाक्यों के द्वारा
- प्रोजेक्ट विधि

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

मूल्यांकन–

वार्तालाप विधि–प्रशिक्षु वार्तालाप विधि को अपनाकर वचन की समझ को विकसित करने में मदद कर सकता है उसके संस्कृत व हिन्दी के वचनों को कक्षा में प्रयोग कर बच्चों से वचन को स्पष्ट करा सकता है जैसे–एकः, द्वि बहवः एकवचन, द्विवचन, बहुवचन

चित्र विधि द्वारा –

वचन को स्पष्ट करने के लिए चित्रविधि सबसे उपयुक्त है। चित्र को दिखाकर प्रशिक्षु बच्चों को वचन का ज्ञान स्पष्ट करा सकता है जैसे–

एकवचन		द्विवचन		बहुवचन	
काकः	1	काकौ	11	काकाः	1111

प्रशिक्षु बच्चों से शब्द देकर तीनों वचनों में शब्द सूची सभी लिंगों में बनवा सकता है।

जैसे–	**बालकः**	**बालिका**	**पुष्पम्**
	एकः	द्वि	बहवः
पुलिंग	बालकः	बालकौ	बालकाः
स्त्रीलिंग	बालिका	बालिके	बालिकाः
नपुंसक लिंग	पुष्पम्	पुष्पे	पुष्णणि

प्रश्नोत्तर विधिः–

वचन की समझ को विकसित करने के लिए प्रश्नोत्तर विधि प्रयोग कर सकते हैं जैसे–

कति फलानि — त्रीणि फलानि

कः आगच्छति — राम, सोहनः, कृष्ण

छोटे–छोटे वाक्यों के द्वाराः–

छोटे–छोटे वाक्यों के द्वारा संज्ञा व सर्वनाम के सभी वचनों का ज्ञान कराया जा सकता है।

जैसे	संज्ञा	–	बालकाः पठति।
	सर्वनाम	–	सः पठित।
	संज्ञा	–	बालिका गच्छति।
	सर्वनाम	–	सा गच्छति।
	संज्ञा	–	पत्रम् पतति।
	सर्वनाम	–	तत् पतति।

प्रोजेक्ट विधिः–

बच्चे चित्र में बनी हुई चीजों को अलग–अलग गीने तथा एक दो और अनेक की संख्या के आधार पर इन शब्दों को लिखों प्रशिक्षु इसे वर्गीकृत करा सकता है।

जैसे– चित्र
- कलम एक वचन ☐
- कलम द्विवचन ☐
- कलम बहुवचन ☐

प्रशिक्षु बच्चों से तीन समूह में चार्ट बनवाकर वचन को स्पष्ट कर सकता है। इस संज्ञा व सर्वनाम में अलग–अलग चार्ट बनवा सकता है।

जैसे–	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	☐	☐	☐

Downloaded From www.dietmathura.org

मूल्यांकन –

सही / गलत

बालकः	–	(नमति, नमन्ति)
छात्रः	–	(पठति, पठन्ति)
तौ	–	(हसन्ति हसतः)
बालिके	–	(नमतः नमन्ति)

रिक्त स्थान की पूर्ति–

अश्वौ तीव्रं ———————— ।

छात्राः ———————— ।

सः गजः ———————— ।

सुमेलित करांकर –

बालकः हसति	द्विवचन
छात्रौ पठतः	एकवचन
ते अश्वौ धावन्ति	बहुवचन

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

पाठ–3

विषय–संज्ञा एवं सर्वनाम शब्दों के सभी विभक्तियों तथा वचनों का ज्ञान

संज्ञा शब्द से बच्चे अपने आस–पास व परिवेश से पहले से जुड़े होते हैं उन संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयोग होने वाले सर्वनामों को भी बच्चे प्रतिदिन दिनचर्या में प्रयोग करते हैं प्रशिक्षु पहले संज्ञा व उसके स्थान पर प्रयोग होने वाले सर्वनाम शब्दों की विस्तृत चर्चा करें। उसके व्याकरणिक पक्षों को स्पष्ट करते हुए प्रशिक्षु उन्हें विभिन्न विभक्तियों और वचनों से परिचित कराये जिससे उन्हें वाक्यों में स्पष्टतया प्रयोग कर सके। विभक्तियों के आधार पर वचनों का प्रयोग सरलतापूर्वक करने में समर्थ हो सके यथा अकारान्त (पुलिंग) आकारान्त (स्त्रीलिंग) और नपुंसक लिंग के सभी विभिक्तियों के तीनों वचनों के रूपों के स्थान पर सर्वनाम शब्दों को प्रयोग कर सकने में दक्षता प्राप्त कर सकें।

उद्देश्यः–

- संज्ञा एवं सर्वनाम शब्दों की समझ विकसित करते हुए विभिन्न विभक्तियों तथा वचनों को स्पष्ट करना।
- संज्ञा एवं सर्वनाम के विविध रूपों एवं उसके परिवर्तित शब्दों के अन्तर को स्पष्ट करना।
- संज्ञा एवं सर्वनाम के अर्थों से परिचित कराना एवं उसके रूप के प्रयोग को सिखाना।

शिक्षण विधियाँ/तरीके–

- वार्तालाप विधि
- चित्र विधि
- प्रश्नोत्तर विधि
- प्रोजेक्ट
- मूल्यांकन

वार्तालाप विधिः–

प्रशिक्षु परिवेश से जुड़े संज्ञा एवं सर्वनाम का ज्ञान कराते हुए विभिन्न वचनों एवं कारकों में परिवर्तित रूपों को स्पष्ट करने के लिए बच्चों के साथ विस्तृत–चर्चा करें। विभक्तियों को बताने के लिए पहले उसके चिह्न पर विस्तृत रूप से बातचीत करें उसे उदाहरण देते हुए समझायें–जैसे–

विभक्ति	चिह्न
प्रथमा विभक्ति	ने
द्वितीया विभक्ति	को
तृतीया विभक्ति	से (के द्वारा)
चतुर्थी विभक्ति	के लिए
पंचमी विभक्ति	से (अलग होने के लिए)
षष्ठी विभक्ति	का की के

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

सप्तमी विभक्ति		में, पै पर	
सम्बोंधन विभक्ति		हे, ओ अरे।	
जैसे– पुलिंग	बालकः	पठति	सः पठति
	बालकौः पठतः		तौ पठतः
	बालकाः पठन्ति		ते पठन्ति
स्त्रीलिंग	बालिका	पठति	सा पठति
	बालिके	पठतः	ते पठतः
	बालिकाः	पठन्ति	ता पठन्ति

यहाँ प्रश्न उठता है कौन (कः) पठता है अर्थात् पढ़ने का कार्य कौन कर रहा है उत्तर मिलता है बालक/पढ़ता है क्रिया हुई अर्थात् कौन के लिए कर्त्ताकारक प्रथमा विभक्ति हुई। इस तरह प्रशिक्षु विभिन्न विभक्तियों व वचनों को उदाहरण देते हुए कक्षा कक्ष में बातचीत करें।

प्रशिक्षु बच्चों के चार समूहों का निर्माण कर प्रत्येक समूह से प्रथमा द्वितीया, तृतीया एवं चतुर्थी विभक्तियों के रूपों को बोलने का अवसर दे एवं विभक्तियों का क्रम समूहों में बदलते रहे।

चित्र विधिः–

चित्र विधि से संज्ञा शब्दों के विविध रूपों का ज्ञान सरलता से कराया जा सकता है। इस विधि के द्वारा बच्चे चित्रों को देखकर शब्द रूपों को वचनों में आसानी से बदल सकते हैं– जैसे–

वानरः

वानरौः 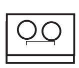

वानराः 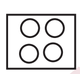

चित्र विधि के द्वारा बदले हुए रूपो के अर्थों का भी चित्र में आये वानरों के वचनात्मक ज्ञान बच्चों को सहज रूप में ज्ञात हो जायेगा। बच्चे वचन के अनुसार क्रिया का प्रयोग भी सरलतापूर्वक चित्र से कर सकते हैं।

जैसे– वानरः खादति 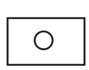
वानरौः खादति
वानराः खादन्ति 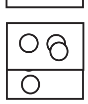

इसी तरह कर्मकारक अर्थात–द्वितीया विभक्ति का प्रयोग प्रशिक्षु कक्षा कक्ष में कर सकता है। जैसे–

रामः पुस्तकं पठति 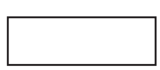
सः पुस्तकं पठति 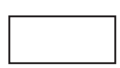
अर्थात प्रश्न कौन पढ़ता है उत्तर मिलता है राम

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

प्रश्न राम क्या पढ़ता है उत्तर मिलता है पुस्तक अर्थात् पुस्तक में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग। इसी तरह से और भी प्रश्न करके उत्तर में मिले शब्द को बताकर प्रशिक्षु विभक्तियों व वचनों का क्रिया के साथ प्रयोग करकर इसको स्पष्ट कर सकता है।

प्रश्नोत्तर विधि–

इस विधि से प्रशिक्षु संज्ञा सर्वनामों को स्पष्ट करते हुए उसके विभक्तियों और वचनों के अर्थ को स्पष्ट कर सकता है–प्रशिक्षु प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग परिवेश एवं दिनचर्या में आने वाले क्रियाकलापों का आधार बनाये। जैसे

कौन पढ़ता है ?	कः पठति ? सः पुस्तकं पठति
वह किससे लिखता है ?	अहं कलमेन लिखामि
गुरू जी को नमस्कार है –	गुरवे नमः

प्रोजेक्ट विधि–

1. परिवेशी संस्कृत संज्ञा शब्दों की सूची बनवाये।
2. अस्मद, युस्मद्, तत् शब्दों की सभी विभक्तियों का चार्ट तैयार कराना।
3. रामाय नमः जैसे प्रयोगों की सूची बनवाना।

मूल्यांकनः–

प्रशिक्षु संज्ञा एवं सर्वनाम के संस्कृत शब्दों के अधिगम को जानते हुए संज्ञा एवं सर्वनाम से सम्बद्ध विभक्तियों की निम्न रूप से मूल्यांकन विधि को अपना सकता है–जैसे

अ को ब से सुमेलित करिये–

अ	ब
वानरौ	खादति
वानरः	खादतः
वानराः	खादन्तिः

1. सत्य/असत्य कथन

निम्नलिखित सत्य कथनों (✓) असत्य कथ पर (×) चिह्न का वाक्ष में प्रयोग करें–

रामाय नमः	☐
रामम् उभयतः	☐
ग्रामं निकषा	☐
देवाय प्रति	☐
रामस्य परितः	☐

Downloaded From www.dietmathura.org

पाठ–4
विषय–श्लोकों तथा नीति परक वाक्यों का अर्थ ज्ञान

उद्देश्यः–

- संस्कृत श्लोकों तथा नीतिपरक श्लोकों का अर्थज्ञान कराना।
- संस्कृत श्लोकों को सुनकर उनके भाव को समझने तथा आनन्दानुभूति करने की क्षमता उत्पन्न करना।
- श्लोकों को शुद्ध उच्चारण सहित पढ़ने की दक्षता का विकास करना।
- बच्चों को नैतिक मूल्यों/जीवन मूल्यों से परिचित कराना एवं दैनिक जीवन में उनके प्रयोग हेतु प्रेरित करना।

प्रशिक्षु श्लोकों तथा नीति वचनों से बच्चों में नैतिकता की भावना का विकास करा सकता है जिससे बच्चों में दया, प्रेम व सहिष्णुता की भावना विकसित हो सकती है। बच्चे अपने घर परिवार से ही दया, प्रेम व आपसी सहिष्णुता की भावना को जानते हैं। प्रशिक्षु उन्हें–उन्हीं चीजों का अर्थ बोध शुद्ध उच्चारण पूर्वक करकर और कराकर उनमें नैतिक मूल्यों का विकास कर सकते हैं।

शिक्षण विधिः–

- नीतिपरक श्लोकों का शिक्षक सस्वर वाचन करें।
- पूरे श्लोक को उचित सुर–लय ताल एवं गति के साथ इस हाव भाव से पढ़ें कि श्लोक का अर्थ स्पष्ट होने लगे।
- चित्रों के द्वारा।
- प्रश्नोत्तर विधि।
- प्रोजेक्ट विधि।

प्रशिक्षु नीति वचनों को उचित आरोह–अवरोह के साथ गाकर बच्चों को सुनाएं जिससे बच्चे उन्हें सुनकर उसके प्रति आकर्षित हों। शुद्ध उच्चारण करते हुए उसे हाव भाव के साथ 'प्रस्तुत' करें जिससे बहुत सारे शब्दों का अर्थ बोध बच्चे स्वयं कर लेंगे अथवा बीच–बीच में उसे बताते चलें। जैसे–

शिक्षक द्वारा उच्चारण	–	अयं निजः परो वेति,	उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।
बच्चों द्वारा उच्चारण	–	अयं निजः परोवेति	
शिक्षक द्वारा उच्चारणं	–	गणना लघु चेतसाम्।	
बच्चों द्वारा उच्चारण	–	गणना लघु चेतसाम्।	

इसी प्रकार श्लोक के शेष दो चरणें का पठन अभ्यास कराएं। बच्चों द्वारा किये जा रहे अशुद्ध उच्चारण का स्वयं शुद्ध उच्चारण करें तथा बच्चों से बार–बार अभ्यास कराएं।

<u>गति विधिः–</u>

शिक्षक श्लोक में आये शब्दों के फ्लैश कार्ड तथा उनके अर्थ के फ्लैश कार्ड दिखाकर शब्द अर्थ स्पष्ट करें।

<u>प्रश्नोत्तर विधिः–</u>

प्रशिक्षु प्रश्नोत्तर विधि द्वारा भी किसी श्लोक का अर्थ बहुत ही सुगमता एवं सहजता के द्वारा स्पष्ट कर सकता है। जैसे–किसी एक श्लोक द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

नमन्ति फलिनो वृक्षाः नमन्ति गुणिनो जनाः ।

Downloaded From www.dietmathura.org

शुष्क वृक्षाश्च मूर्खाश्च न नमन्ति कदाचन।।

- शिक्षक स्वयं श्लोक का शुद्धता, यति, गति के साथ आदर्श वाचन करेंगे।
- सामूहिक अनुवाचन बच्चों से कराएं।
- एक–एक बच्चे से श्लोक को पढ़वाएं व उनकी उच्चारण सम्बन्धी अशुद्धियों को ठीक करायें।
- श्लोक में आये प्रत्येक शब्द का अर्थ बच्चों को बताएँ तत्पश्चात बच्चों से पूछें। न बता पाने पर स्वयं उसका अर्थ श्यामपट्ट पर लिखें तथा श्लोक की अन्य कठिनाईयों का भी निवारण करें।
- श्लोक का अर्थ भी बताएँ तथा ये भी बताएँ कि किस प्रकार के मनुष्य विनम्र नहीं होते ।

शिक्षक प्रश्नोत्तर द्वारा श्लोक को और भी स्पष्ट कर सकता है।

जैसे–

प्रश्न– वृक्षाः कदा नमन्ति ?
उत्तर – वृक्षाः फलिनो नमन्ति।
प्रश्न– कीदृशा जनाः नमन्ति ?
उत्तर– गुणिनो जनाः नमन्ति ।
प्रश्न– कीदृशाः जनाः न नमन्ति ?
उत्तर– मूर्खाः जनाः न नमन्ति ।
प्रश्न– कीदृशाः वृक्षाः न नमन्ति ?
उत्तर– शुष्क वृक्षाः न नमन्ति ।

चित्रों के द्वारा–

चित्र को दिखाकर प्रशिक्षक विभिन्न भावों का अर्थबोध करा सकता है। वह चित्र को दिखाते हुए उसके बारे में अर्थ का भाव बता सकता है। इस प्रकार बच्चे चित्र को ध्यानपूर्वक देखकर उसके भाव को समझ सकते हैं। बच्चे परिवेश से ही इन चीजों को जानते है। वे घर–बाहर (भाई–बहन मित्र) सभी जगह उनका प्रयोग करते हैं। उनके अन्दर दया करूणा जन्म से प्राप्त हैं उन्हें प्रशिक्षक उभारकर उनमें दया की भावना भर सकता है। इसी प्रकार शिक्षक परोपकार के बारे में चित्रों के माध्यम से बताते हुए बच्चों में इस भावना को जागृत करते हुए यह बता सकता हैं कि मनुष्य का यह शरीर ही दूसरों का उपकार करने निमित बना हुआ है।

जैसे–

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः ।
परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकारार्थं इदं शरीरम् ।।

- प्रशिक्षु सर्वप्रथम श्लोकों का सस्वर वाचन करें/कराएं
- श्लोकों का अन्वय करते हुए भाव स्पष्ट करें।
- श्लोकों को सुन्दर अक्षरों में लिखवाएं।

सूक्तियों का चित्रों से मिलान कीजिएः–

हसं मध्ये बको यथा।
प्रियवाक्यं –प्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।
वसुधैव कुटुम्बकम्।
परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः ।

प्रोजक्ट विधि–

प्रशिक्षु बच्चों से नीति वचन/सुभाषितानि की सूक्तियाँ पट्टियों पर हिन्दी/ संस्कृत में लिखवाएँ।

जैसे–

Downloaded From www.dietmathura.org

- विद्या धनं सर्व धनं प्रधानम्।
  सभी धनों में विद्या धन श्रेष्ठ है।
- आचारः परमो धर्मः ।
- आचरण श्रेष्ठ धर्म है।
- सत्यमेव जयति नानृतम् ।
  सत्य की ही जीत होती है, असत्य की नहीं।

मूल्यांकन/पुनरावृत्ति–

- बच्चों से श्लोक पर आधारित प्रश्न कर अर्थ बोध का मूल्यांकन करें।
- श्लोक पर आधारित चित्र दिखाकर वाक्य बोलने के लिए प्रेरित करें।
- इस श्लोक से हमने क्या सीखा ? बच्चों से स्पष्ट कराएँ।
- श्लोक पट्टियों फ्लैश कार्डों के माध्यम से श्लोक पूर्ण कर उत्तर–पुस्तिका में लिखवाएँ शिक्षक उसका निरीक्षण करें।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

पाठ–5
विषय–एक से बीस तक की संस्कृत संख्याओं का ज्ञान

उद्देश्य–

(1) संख्यावाचक शब्दों (गिनतियों का संस्कृत में बोध कराना।

(2) क्रम सूचक संख्या शब्दों को स्पष्ट करना।

(3) सख्याओं को गिनने की दक्षता विकसित करना।

(4) शुद्ध उच्चारण की क्षमता विकसित करना।

विद्यालय आने से पूर्व बच्चे शुरूआती भाषायी दक्षताएँ अपने घर–परिवार में सहज रूप से प्राप्त करते रहते हैं। सीखने की यह क्रिया सीखने–सिखाने का अहसास दिलाये बिना स्वाभाविक रूप से होती है।

प्रशिक्षु का यह पहला दायित्व है कि बच्चों को संस्कृत भाषा को सहजता से सिखाने हेतु उपयुक्त माहौल रचें। ऐसा वातावरण जिसमें अनजाने–अनचाहे भी संस्कृत सीखने की ओर अग्रसर हों। उसे संस्कृत सीखने में मजा आये और वह इस भाषा के साहित्य की आनन्दानुभूति कर सकें।

बच्चे मातृभाषा में संख्याओं से परिचित हैं। संख्याओं को गिनने की दक्षता उनमें है। प्रारम्भ में बच्चे अपने परिवेश से बहुत कुछ सीख लेते हैं जैसे–टाफी, बिस्किट, गोली, खिलौना इन सभी वस्तुओं को वह अनायास ही गिनना सीख लेता है। तथा खेल–खेल में भी संख्याओं (गिनती) के बारे में बहुत कुछ जानकारी प्राप्त कर लेता है। बच्चों को संख्याओं को गिनने की दक्षता विकसित करने हेतु निम्न शिक्षण विधियों को अपनाया जा सकता है–

1. बातचीत (वार्तालाप विधि)।
2. चित्रों द्वारा।
3. प्रश्नोंत्तर विधि।
4. कहानी विधि।

बातचीत द्वारा:–

बातचीत के द्वारा प्रशिक्षु को संख्याओं (गिनती) का बोध बहुत ही आसान तरीके से करा सकता है। प्रशिक्षु कक्षा के एक बच्चे को अपने पास बुलाकर छात्रों को बताएँ–एकः बालकः एक और बच्चे को उसके साथ खड़ाकर कहे– द्वौ बालको इसी प्रकार उन बच्चों के साथ एक–एक बच्चे को जोड़ते हुए बीस तक की संख्याओं का अभ्यास करायें। इसे पहले हिन्दी में तत्पश्चात संस्कृत में अभ्यास कराएँ कक्षा–कक्ष के अन्तर्गत होने वाली सामान्य बातचीत संस्कृत में हाव–भाव के साथ की जाय, जैसे–

- **संख्या बोध गतिविधिः–** कक्षा को दो समूहों में बाँटकर आमने–सामने बैठा दिया जायेगा। प्रत्येक समूह में बच्चों का अपना–अपना क्रमांक निश्चित कर दिया जायेगा। अब समूह एक क्रमांक एक वाला बच्चा हिन्दी में संख्या (एक) बोलेगा तुरन्त दूसरे समूह का क्रमांक एक संख्या (1) एक को

Downloaded From www.dietmathura.org

संस्कृत में एकः बोलेगा, इसी प्रकार अन्तिम क्रमांक तक संख्याओं को हिन्दी–संस्कृत में बोलने की चुनौती दी जायेगी।

अन्त में संख्याओं को घटते क्रम (अवरोही क्रम) में समूह के अन्तिम सदस्य से शुरू करके संख्या (1) एक तक आयेंगे।

उपर्युक्त विधि से संख्याओं को संस्कृत में आरोही–अवरोही क्रम में बोलने का अभ्यास के बाद शिक्षक द्वारा मूल्यांकन हेतु दोनों समूहों से किसी हिन्दी संख्या को संस्कृत में तथा संस्कृत संख्या को हिन्दी में बताने को कहा जायेगा। न बता पाने की स्थिति में अन्यों को मौका दिया जायेगा। इस गतिविधि में स्कोर बोर्ड का प्रयोग कर सकते हैं।

- **गतिविधिः–**बच्चों से अपने बस्ते के अलग–अलग सामानों का नाम लिखकर उनके आगे उनकी संख्या संस्कृत गिनती में लिखें जैसे–

किताब – षड्

कलमं –

पेंसिल –

कापी –

चित्र द्वारा :–

चित्र विधि से ब च्चों को संख्या (गिनती) का बोध अत्यन्त रोचक विधि से कराया जा सकता है। यह विधि अत्यन्त सरलएवं सुबोध है।

जैसे–

एकः बालकः अस्ति

संख्याओं का मिलान चित्रों से कीजिएः–

षड्

द्वौ

द्वादश

एकादश

सप्त

एकः

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

दी गई संख्याओं को हिन्दी में लिखिए :–

त्रयः मण्डूका –––तीन मेढक

चत्वारः मत्स्याः––––––––––––––

दशः शुकाः––––––––––––––––––

प्रश्नोत्तर विधिः–

प्रश्नोत्तर विधि द्वारा प्रशिक्षु संख्या बोध बहुत ही सरलतम् ढंग से करा सकता है। इस विधि द्वारा शिक्षण के समय छात्रों में बराबर सक्रियता बनी रहती है। इसमें प्रश्नोत्तर संस्कृत में ही किया जाता है। पूर्व माध्यमिक स्तर के छात्रों के शिक्षण में प्रायः इन्हीं विधियों का प्रयोग होता है।

जैसे–विद्यार्थी दिनचर्या पर प्रश्नोत्तर किया जा सकता है।

प्रश्न– विद्यार्थी कदा जागर्ति

उत्तर– विद्यार्थी प्रातः पंच वादने जागर्ति

प्रश्न– सः कदा खेलति ?

उत्तर–सः सायम् पंचवादने खेलति ।

इसी क्रम में प्रशिक्षु बच्चों को समय–चक्रम के बारे में भी बता सकते है। जैसे–

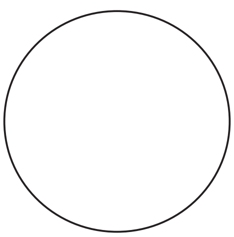

षष्ठ वादनम्

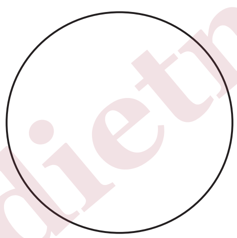

सपाद् पंचवादनम्

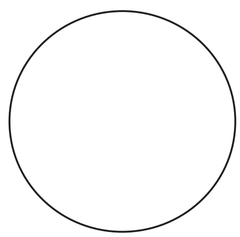

सार्ध पंचवादनम्

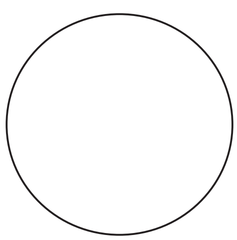

पादोन सप्तवादनम्

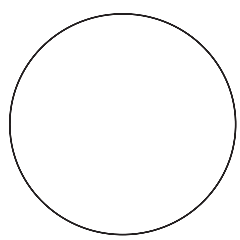

पंच क्षणाधिकम् षड् वादनम्

<u>कहानी विधिः–</u>

विद्यालय में आने के बाद बच्चा अपनी कक्षा में आता है। कक्षा कक्ष का वातावरण भी ऐसा सृजित किया जाना चाहिए कि बच्चा संस्कृत भाषा को कठिन न समझे बल्कि वह यह समझने कि

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

यह एक सरल और सहज भाषा है। अतः प्रशिक्षु को चाहिए कि कक्षा में कुछ सरल और सरस कविताओं, कहानियों के चार्ट चित्र सहित टांगें अतः प्रशिक्षु को चाहिए कि संख्या–बोध कराने के लिए कहानी विधि द्वारा बच्चों को अत्यन्त सहज तरीके से बोधगम्य कराएं। क्योंकि कहानी बच्चों को सोचने–समझने, जानने, कल्पना करने अथवा जोड़ने घटाने का पूरा अवसर देती है। इस परिप्रेक्ष्य में बच्चों को एक कहानी जिसका शीर्षक है–

''एकः कुत्र गतः ? के माध्यम से 1 से 10 तक की संख्या को बहुत सरल तरीके से सिखाया जा सकता है। इस कहानी का रूचिकर बनाने के लिए बच्चों द्वारा संवाद हाव–भाव के साथ कराया जा सकता है।

जैसे– नायकः ––वयं सर्वे स्म न वा ? –––एकः दौ, त्रयः चत्वारः पंच, षद, सप्त, अष्ट नव (नौ बच्चों को खड़ा करके गिनवायें)

विशेष– कक्षा 5 के बच्चों के लिए इसका नाटकीय प्रस्तुतीकरण भी बहुत प्रभावी होगा।

पूरी कक्षा को दस–दस कीपंक्ति में खड़ा करके कई बच्चों से गिनती का अभ्यास–एकः द्वौ, त्रयः चत्वारः पंच, षड, सप्त, अष्ट, नव दश, एकादश, त्रयोदश, चर्तुदशः पंचदश, षोड्स, सप्तदश, अष्टदश, एकोन विंशति, विंशति।

मूल्यांकन–

संस्कृत मूल्यांकन हेतु हमे नये दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यमता है। लिखित अभिव्यक्ति कहानी, घटना, वर्णन आदि हेतु प्रबन्धाात्मक प्रश्न आवश्यक हैं, किन्तु साथ ही वस्तुगत परीक्षा के लिए बहु विकल्पीय, तुलना, रिक्त स्थान की पूर्ति आदि प्रश्नों को भी समाहित करना चाहिए। संस्कृत में मौखिक परीक्षा का भी आयोजन कराना आवश्यक है। जिससे उनकी ध्वनियों एवं शब्दों के उच्चारण, वाचन तथा मौखिक अभिव्यक्ति का आकलन किया जा सके।

1. गतिवधि आधारित मूल्यांकन पर बल दें।
2. संस्कृत में संख्याओं को पूछना, संख्याओं को लिखने को कहना।
3. पाठों में प्रयुक्त संख्यावाची विशेषणों की सूची बनवाना।

–0–

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org